International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(I), April - June, 2024, pp. 108-112

शीतयुद्धोत्तर काल में भारत की विदेश नीति (सोवियत संघ के विघटन के पश्चात्)

श्री नेमीचन्द*

सार

विदेश नीति एक देश की अन्य देशों के बीच सम्बन्धों की एक कड़ी होती है, जिसमें द्विपक्षीय – बहुपक्षीय सम्बन्ध स्थापित किये जाते है। जैसे की भारत के प्राचीन विद्वान कौटिल्य ने पड़ोसी देशों के सम्बन्ध स्थापित करने के लिए पर–राष्ट्र सम्बन्धों में मंडल सिद्धान्त, षड्गुण्य नीति, सप्तांग सिद्धान्त, उपाय राजदूत व्यवस्था, गुप्तचर व्यवस्था का विवरण दिया। जिसका आज भी औचित्य है। स्वतंत्रता पश्चात् भारत में शीतयुद्ध काल में विदेश नीति का आधार गुटनिरपेक्षता की रही साथ ही संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ से जितना सम्भव हो सका उतना सहयोग प्राप्त किया। भारत की स्थिति को मजबूत बनाया। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् भारत की गुटनिरपेक्षता, पंचशील की प्रासंगिकता को विद्यमान रखते हुए अनेक मुद्दों जैसे सुरक्षा परिशद में स्थाई सदस्यता की मांग, व्यापार एवं वाणिज्य में महत्ती भूमिका, आतंकवाद को समाप्त करना, पर्यावरण संरक्षण करना इत्यादि अनेक प्रकार के कार्यों को करवाने में अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया।

शब्दकोशः *गुटनिरपेक्षता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, पंचशील, निशस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद, उन्मूलन, कूटनीति, शीत युद्ध, लुक ईस्ट नीति, भूमण्डलीकरण, बहुध्रुवीय, शक्ति संतुलन, आतंकवाद राजनय।*

प्रस्तावना एवं उद्देश्य

1990–91 की घटनाओं ने एक–ध्रुवीय व्यवस्था के प्रबल संकेत दे दिए थे। अतः नये परिवेश में भारत की विदेश नीति को राष्ट्रीय हितों के अनुरूप नये विकल्पों पर बल देना होगा। लेकिन विदेश नीति में शत्रु भाव को पहचानने की क्षमता का विकास भी करना होगा। शीत युद्ध के अवसान के उपरांत विश्व राजनीति में शक्ति संतुलन एवं सत्ता के लिए संघर्ष जैसे सिद्धांत महत्व रखते हैं। अतः भारत को अपनी विदेश नीति में परमाणु स्वायतता पर कोई समझौता नहीं करना होगा। भारत को इस संस्था के लोकतांत्रीकरण पर जोर देते हुए सुरक्षा परिषद में स्थाई सीट का प्रबल दावेदारी की रणनीति अपनानी होगी। 9ध्11 की आतंकवादी घटना की दृष्टि से हमें सामरिक व्यापारिक व आर्थिक हितों की सुरक्षा हेतु विकसित देशों के साथ सामरिक रणनीति में भागीदारी सुनिश्चित करना होगा।

फिलीस्तीन में हमास की जीत की दृष्टि से यहाँ लोकतंत्र बनाम आतंकवाद के मुद्दे पर विश्व समुदाय को नया दृष्टिकोण अपनाना होगा। वर्तमान में हमास (गाजा पट्टी) तथा इजराइल द्वारा दिये गये घातक हमले पर भी भारत ने दो टूक आतंकवाद और युद्व की आलोचना की है। भूमंडलीकरण के युग में भारत की पूर्वोन्मुख विदेश नीति को अधिक सार्थक बनाना होगा। इस दिशा में विभिन्न देशों से, क्षेत्रीय सहयोग समझौते से भारतीय हितों के संवर्धन में मददगार मिलेगी। अर्थव्यवस्था (WTO की भूमिका) के लोकतांत्रीकरण पर बल देना होगा। अतः हमें हमारी स्वायत्ता को वरीयता देनी होगी। अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार, परमाणु ईंधन अनुसंधान कार्यक्रम को प्राप्त करने का प्रत्येक देश का अधिकार है।

---

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान (विद्या सम्बल), राजकीय कन्या महाविद्यालय, डीडवाना, राजस्थान।

अध्ययन की प्रासंगिकता एवं महत्व (Importance & Relevance of the Study)

1991 का वर्श अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में अत्यधिक परिवर्तनों का वर्श रहा था, क्योंकि इस वर्श पूर्व सोवियत संघ की शक्ति का विघटन हुआ और शीत युद्व की समाप्ति एक ऐतिहासिक घटना रही। विदेश नीति के मूल तत्वों को नहीं त्यागा लेकिन 1998 में परमाणु परीक्षण हमारी सुरक्षा व्यवस्था के लिये आवश्यक था। उदाहरणार्थ, विदेश नीति को आर्थिक हितों से जोड़ना, ईजरायल के साथ नये सम्बन्धों का अध्याय की रचना इजरायल गाजा पट्टी का विवाद पड़ोसी देशों के साथ–साथ अमरीकी सम्बन्धों में सुधार, गुजराल सिद्वांन्त, का अंगीकरण, भारत–ई.यू संम्बन्धों को नये आयाम देना आदि। हमें एशियाई शक्ति सन्तुलन पर ध्यान देना होगा।

पुस्तक समीक्षा (Review of the Work Already done)

भारतीय विदेश नीति के पाँच से भी अधिक दशकों का व्यापक एवं समग्र दृश्टिकोण स्वीकार किया है। इस पुस्तक में शीत युद्वोतर युद्व में हुए बदलाओं पर गहन चर्चाएं प्रस्तुत की गई। इस पुस्तक में उन सभी नये आयामों को शामिल किया गया है। जो अन्तराश्ट्रीय क्षितीज पर विशेष महत्व दे रहे हैं।

शीत युद्व के अवसान के बाद (With the end of the bi-polar world) एवं विचारधारा के अन्त के साथ गुट–निरपेक्षता की अवधारणा का प्रभाव भी क्षीण होते देखा गया है, क्योंकि नाटो (NATO) के साथ संयुक्त राश्ट्र संघ के सदस्य देशों ने विकास हेतु एक शक्ति के पक्ष में स्वर उठाने लगे। फिर इस नये युग में शस्त्रों के स्थान पर व्यापारिक व आर्थिक गतिविधियों का महत्व बढने लगा। एक समीक्षक के अनुसार, The non aligned state has to learn to be unfriendly countries and friendly with those who are willing to be helpful at any of time. There may be continuity, but there is no certainity of permanent of attachement.(R.K. pruthi, Internetional Politics, New Delhi -2 Sarup & Sons, 2005 p 2022)

Indian Foreign Affairs Journal, New Delhi के एक साक्षात्कार में प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह भारत को Out of Box से बाहर निकलने की नीति पर बल दिया है (जिसका संदर्भ नेहरूकालीन गुट–निरपेक्षता की नीति से है), ताकि भविष्य में नये विकल्प को खोजा जा सके। बदलते परिवेश में राष्ट्रीय हितों के अनुरूप भारत ने 1991 से आर्थिक सुधारों के कार्यक्रम को स्वीकारा जो राष्ट्रीय हितों एवं आम सहमति पर आधारित रहा है। नई विश्व व्यवस्था में भारत ने मूल्यों एवं मैरिट के आधार पर विदेश नीति में नये विकल्पों को स्वीकारा है। (For details, see the 10th Chapter of R.K. Pruthi's, International Politics, New Delhi -2, Sarup & Sons, 2005, p. 208.)

भारत के आर्थिक इतिहास भी 2 मार्च 2006 का समझौता ऐतिहासिक घटना रही है, क्योंकि दोनों देशों संयुक्त बयान में निवेश, कृषि, रोजगार, मुक्त व्यापार आदि पर सहयोग की महता को रेखांकित किया है। भारत अमेरिका आर्थिक समझौता विश्व को यह संदेश देता है कि विकसित देश चीन के बढ़ते वर्चस्व को कम करने के लिए अमेरिका अब भारत को आर्थिक शक्ति देखना चाहता है। बड़ा व्यापार साझेदार व निवेश बन चुका है। जिस रफ्तार से व्यापार व आर्थिक परिदृश्य बदल रहा है उससे स्पष्ट है कि भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर आ चुका है। (जयंतीलाल भंडारी, आर्थिक महाशक्ति बनने के डगर पर, राजस्थान पत्रिका, अजमेर 3 मार्च 2006 पृ. 8)

शोध परिकल्पना

- भारत की विदेश नीति का लक्ष्य प्रौद्योगिकी, आर्थिक व व्यापारिक दृष्टि से आत्म निर्भर बनाकर एशिया में आर्थिक शक्ति के रूप में उभरना होगा।
- भारत को क्षेत्रीय सहयोग पर बल देना होगा।
- तीसरी दुनिया के देशों में विकास हेतु लोकतांत्रिक प्रक्रिया, विश्व शांति, हिंसा मुक्त व्यवस्था पर बल देना होगा।

- विश्व की राजनीति का आधार पूर्व की भाँति आज भी शक्ति संतुलन पर आधारित है। अतः शक्ति प्राप्त के बिना भारत एशिया की राजनीति में अपनी पहचान नहीं बना सकता।
- भारत परमाणु क्षेत्र में एक उत्तरदायी देश रहा है और रहेगा।
- विदेश नीति निर्णय प्रक्रिया में आतंकवाद के मुद्दे पर अमेरिका सहित ई. यू. देशों का सहयोग प्राप्त करने के लक्ष्य को प्राथमिकता देना चाहिये।
- हमारी विदेश नीति व राजनय का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की सदस्यता प्राप्त करने में विश्व जनमत तैयार करना होगा।

अध्ययन पद्धति

भारत की विदेश नीति सोवियत संघ के विघटन के पश्चात के इस शोध पत्र में विशेश रूप से विश्व की घटनाक्रम का अध्ययन एक निश्चित समय के लिये की गई एक संक्षिप्त अध्ययन है। जिसमें शोधार्थी के अनुभव के साथ ही द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन से तथ्यों का संग्रह कर व्यक्तिवृत अध्ययन करने का प्रमाण किया गया है।

विदेश नीति (1947 से 1991 तक)

ऐतिहासिक परम्पराओं के आधार पर पं. नेहरू जी ने भारत की विदेश नीति की आधारशिला रखी थी। भारत की विदेश नीति के प्रमुख तत्वों में संयुक्त राश्ट्र संघ का समर्थन, विश्व के विभाजित देशों के साथ गुट निरपेक्षता की नीति का अनुसरण, शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व तथा पंचशील की नीति की घोशणा, राश्ट्रमंडल के साथ मित्रता की नीति को स्वीकारा गया था परन्तु विदेश सम्बन्धो में भारत ने अपनी स्वतन्त्रता की नीति को अपनाया। निःसंदेह पं. जवाहरलाल नेहरू ने (1947 से 1964) भारत की विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1964 से 1966 तक शास्त्री जी ने भी परम्परागत विदेश नीति का अनुसरण किया। 1966 से 1977 तक श्रीमती इन्दिरा गाँधी का नेतृत्व विश्व के समक्ष चमत्कारी रहा। उन्होंनें विश्व में भारत को एक शक्तिशाली राश्ट्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए पहली बार 18 मई, 1974 को प्रथम परमाणु विस्फोट किया क्योंकि भारत ने सोवियत संघ के साथ मैत्री संधि संम्पन्न की थी।

1977 से 1979 के समय में भारतीय शासन में एक दल के प्रभाव का अंत हुआ और जनता दल की सरकार बनी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संदेह होने लगा कि विदेश नीति में परिवर्तन आयेगा। परंतु नई सरकार भी गुट–निरपेक्षता की नीति में अपना विश्वास दोहराया। 1980 से 1984 में फिर श्रीमती इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में सरकार बनी। इसी समय भारत को गुटनिरपेक्ष देशों को नया नेतृत्व मिला। इसमें 107 देश होने के कारण भारत की स्थिति अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण हुई। 1984–1989 में राजीव गांधी ने चार नये सिद्धांतों पर बल दिया– निःशस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद उन्मुलन, विकास तथा शांति की कूटनीति। इससे भारतीय विदेश नीति नई दिशाओं की ओर अग्रसर होई। इसे Era of Continuity & Change कहा जाता है।

विदेश नीति (1991 से वर्तमान तक)

जून 1991 मई, 1996 के समय पी.वी. नरसिंहम्वा राव के समय विश्व में शीत युद्ध का अंत हो गया। इसी के साथ 26 दिसम्बर, 1991 को सोवियत संघ का विघटन हुआ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिवर्तन होने के कारण भारतीय विदेश नीति में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक था। 1996 से 1997 में भारत में नेतृत्व परिवर्तन हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी 13 दिन (16 मई से 28 मई, 1996) प्रधानमंत्री तथा एच.डी. देवगौड़ा (1 जून 1996 से 11 अप्रैल 1997) तक सत्ता में रहे। वर्तमान में यू.पी.ए. के नेतृत्व में मनमोहन सरकार की विदेश नीति भी सभी पड़ोसी देशों के साथ मित्रता पूर्ण संबंधों में विश्वास रखती है। इस काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना 18 जुलाई, 2005 में भारत अमेरिकी परमाणु संधि पर हस्ताक्षर करना है। इसी के साथ भारत अपनी (लुक ईस्ट नीति) पर भी कायम है। वर्तमान में 2014 से लेकर आज तक श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने व्यावहारिक विदेश नीति को असली जामा पहनाया है। जिसके तहत रूस, युक्रेन युद्ध को शांति वार्ता के लिए दोनों को आह्वान किया है तथा साथ ही अरब राश्ट्रों से अच्छे सम्बन्ध बनाएँ है।

शीतयुद्धोतर में भारत की विदेश नीति के नये आयाम

पिछले तीन दशक में (1991–2023) कुछ घटनाक्रम ने विश्व की राजनीति के परिदृश्य को बदला है। जैसे, यूरोप का एकीकरण, सोवियत रूप के पतन के बाद अमेरीकी विदेश नीति में सामरिक भागीदारी (Strategic Partnerships), निश्स्त्रीकरण, आणविक प्रसार की रोकथाम, संयुक्त राश्ट्रसंघ सुधार, आतंकवाद व्यापारिक क्षेत्रीय संगठनों का उदय, परमाणु उर्जा की माँग, आदि। यूरोपीय देशों से जुड़कर सुरक्षा परिशद की सीट पर समर्थन चाहता है। फिर नये शक्ति संतुलन की दृश्टि से भी भारत को यूरोपीय देशों की मदद की जरूरत पड़ सकती है।

भारत की विदेश नीति के सिद्धान्त

- विश्व शांति व सुरक्षा का सिद्धान्त।
- संयुक्त राष्ट्र की संरचना में व्यापक सुधार कार्यक्रम का पुरजोर समर्थन।
- शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धान्त (विशेषतः पड़ौसी देशों के साथ)।
- निःशस्त्रीकरण एवं परमाणु अप्रसार विश्व की परिकल्पना।
- नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का समर्थन यानि अन्तराष्ट्रीय संगठनों/संस्थाओं के समर्थन के साथ आर्थिक क्षेत्रीय संगठनों का समर्थन।
- एक ध्रुवीय व्यवस्था के अनुरूप अपने को ढालते हुए बहु ध्रुवीय शक्ति संतुलन व्यवस्था में विश्वास प्रकट करना।
- आर्थिक उदारीकरण की नीति का समर्थन।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रायोजित आतंकवाद एवं उग्रवाद मादक पदार्थों का विरोध।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में खाड़ी संकट का समाधान खोजना।
- द्विपक्षीय सामरिक एवं सुरक्षा रणनीति में विश्वास।
- लुक ईस्ट विदेश नीति को नये आयाम देना, आदि।

निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति 1991 से लेकर वर्तमान तक में अवगत होता है कि भारत ने विश्व स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना ली है। हम विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्तियों में सम्मिलित हो रहे है। विश्व की स्थिति में विशेश रूप से कोरोना काल पश्चात् विश्व के सभी देश भारत की तरफ देखने लगे है। भारत अपने आप में विकसित देशों की श्रेणी में आते हुए देख सकते है। भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता, अंतरराष्ट्रीय संगठनों, क्षेत्रीय संगठनों, संयुक्त राश्ट्रसंघ में अपनी भूमिका बढ़ाई है। भारत ने विशेश रूप से पर्यावरणीय मुद्दों,मानव अधिकार के मुद्दों ,परमाणु परीक्षणों पर सहमति, एक ध्रुवीय शक्ति को रोकना तथा बहु ध्रुवीय विश्व को बनाना, पड़ोसी देशों से अच्छे सम्बन्ध बनाना तथा उनको आर्थिक सहयोग देना इत्यादि। विश्व स्तर पर भारत अपनी ताकत को बढ़ाने के साथ अनेक देशों से आर्थिक एवं अन्य प्रकार के समझौतों को प्राथमिकता दी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Michael krepon, 'Nuclear Deal: No Exemption for India', The Times of India, New Delhi, 7th Feb, 2006, P. 16.
2. The Emerging structure of International Politics', in International Security, New York, volume 16/45,1993.
3. Ramesh Dubey & B.M. Jain, International Politics, New Delhi, Vishvabharati publications, 2005.
4. U.R. Ghai, Foreign Policy of India (Jallandhar, New Academic Co., 2004.)

5. Annapurna Nautiyal, Challenges to India's Foreign Policy in the New Era (New Delhi, Gyan Publishers,2006)
6. Sumita Mandla: J & K; Towards a More Federalished Solution (New Delhi, Gyan publication,2005)
7. Virender grover, UNO, NAM, NIEO, SAARC and Indian Foreign Policy (New Delhi, Deep & Deep publications, 2000)
8. M.R. Biju, Indian's Foreign policy Towards A New Millennium (New Delhi, National, 2000.)
9. Alam Aftab; US Policy Toward South Asia: With special Reference to Indo-Pak Relations (New Delhi, Raj, publications, 2000)
10. N. Jaya, Foreign. Policy of India (New Delhi, Atlantic publications, 2001)
11. Ravi Nanda, India and Emerging Multi-Polar Word (New Delhi, Lancer publications, 2001)
12. A.K. Damodaran, Beyond Autonomy: Roots of Indian Foreign Policy (New Delhi, Somaiya publications, 2001)
13. Rl Jackson, The Non-Aligned, the UN and The Super Powers (New Delhi, Paeger Pvt. Ltd., 1983)
14. V.N. Khanna, India's Nuclear Doctrine (New Delhi, Sanskriti Publications,2000)
15. जे.एन. दीक्षित, भारतीय विदेश नीति, (दिल्ली–2, प्रभात प्रकाशन, 2004)
16. आर. एस. यादव, भारत की विदेश नीति : एक विश्लेशण (इलाहाबाद, उ.प्र, किताब महल, 2004)
17. सी. एम. कोली, प्रमुख देशों की विदेश नीति (जयपुर, साहित्यकार, 2000)
18. संजय कुमाार सिंह, राजीव गांधी के प्रधानमंत्रीत्वकाल में भारत–पाक सम्बन्ध (नई दिल्ली, विश्वभारती प्रकाशन, 2005)
19. डॉ. गौतमवीर, महाशक्तियों की विदेश नीतियां (छमू क्मसीपए टपैंअंईींतजप च्नइसपबंजपवदेए 2005)
20. जे.एन. दीक्षित, भारत की विदेश नीति और इसके पड़ौसी (ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005)
21. मुद्रिका प्रसाद, ''अन्तराश्ट्रीय सम्बन्ध, नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2005, अध्याय 20 पृ. 134।
22. https://mdu.ac.in
23. https://highereducation.mp.gov.in
24. https://nios.ac.in
25. https://www.slideshare.net

❖◆❖